व्यावहारिक एवं कौशल-आधारित शिक्षा का मुख्यधारा में समावेशन: भारतीय शिक्षा बोर्ड ने कृषि को विद्यालय पाठ्यक्रम में शामिल किया

विवेक[1] एवं डॉ. मोनिका यादव[2]

[1]निदेशक, प्रशिक्षण विभाग, भारतीय शिक्षा बोर्ड, नोएडा, भारत

ईमेल: vivek@bsb.org.in

[2]उप-शिक्षा अधिकारी (प्रशिक्षण), प्रशिक्षण विभाग, भारतीय शिक्षा बोर्ड, नोएडा, भारत

ईमेल: monika.yadav.bsb@gmail.com

भारतीय शिक्षा बोर्ड (BSB), जो एक अखिल-राष्ट्रीय विद्यालय बोर्ड है, ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा – विद्यालय शिक्षा (NCF-SE) 2023 के अनुरूप एक महत्वपूर्ण पाठ्यचर्या सुधार की पहल की है। इसके अंतर्गत कृषि को सभी विद्यालय स्तरों पर एक व्यावसायिक विषय के रूप में सम्मिलित किया गया है। यह पहल कौशल-आधारित, अनुभवात्मक एवं सन्दर्भानुकूल शिक्षा की दिशा में एक परिवर्तनकारी कदम है, विशेषकर उस देश में जहाँ कृषि आज भी आजीविका का प्रमुख साधन है। इसका उद्देश्य शैक्षणिक ज्ञान और वास्तविक जीवन के अनुप्रयोग के बीच की खाई को पाटना है, ताकि विद्यार्थियों को उनके शैक्षणिक सफर की प्रारंभिक अवस्था से ही कृषि प्रथाओं का परिचय मिल सके।

यह लेख BSB की इस पहल के शैक्षिक, सामाजिक-आर्थिक और नीतिगत प्रभावों का विश्लेषण करता है तथा इसे भारत की कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था और सतत विकास के वैश्विक प्रयासों के संदर्भ में रखता है। यह सुधार NEP 2020 की उस भावना से गहराई से जुड़ा है, जिसमें "कक्षा 6 से व्यावसायिक अनुभव" और "स्थानीय आजीविकाओं से जुड़ी हस्तकला एवं कौशलों का प्रत्यक्ष अनुभव" देने पर बल दिया गया है। इन निर्देशों के अनुरूप, BSB का कृषि पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को व्यावहारिक दक्षताएँ प्रदान करने के साथ-साथ पर्यावरण चेतना और ग्रामीण उद्यमिता को भी प्रोत्साहित करने की क्षमता रखता है।

अनुभव-आधारित एवं स्थानीय प्रासंगिकता पर आधारित पाठ्यक्रम के माध्यम से BSB ने NEP के विज़न को कक्षा में लागू करने का ठोस प्रयास किया है। यह प्रतिबद्धता विशेष रूप से तब स्पष्ट होती है जब हम देखते हैं कि BSB के अंतर्गत कृषि को किस प्रकार समग्र शिक्षा का आधारस्तंभ बनाया जा रहा है।

1. भारत की रीढ़ है कृषि — अब शिक्षा की भी

भारत के कृषि क्षेत्र में 50% से अधिक जनसंख्या कार्यरत है, फिर भी अधिकांश विद्यार्थी—विशेषकर शहरी क्षेत्रों में—यह नहीं जानते कि उनका भोजन कहाँ से आता है और उसके उत्पादन के पीछे कितना विज्ञान एवं परिश्रम है (कृषि मंत्रालय, 2023)। विद्यालय के मुख्यधारा पाठ्यक्रम में कृषि को शामिल करके BSB यह सुनिश्चित कर रहा है कि विद्यार्थी इस महत्वपूर्ण क्षेत्र के प्रति प्रत्यक्ष जागरूकता, सम्मान और सराहना विकसित करें। चाहे वह विद्यालय के उद्यान हों, फसल प्रयोग हों या खेतों के दौरे—विद्यार्थी अब भारतीय समाज की जड़ों से जुड़ रहे हैं, सचमुच और रूपक दोनों रूपों में।

2. शिक्षा को बनाना व्यावहारिक, सार्थक और जीवन-आधारित

BSB का कृषि शिक्षा दृष्टिकोण केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं है। यह स्वभाव से अंतर्विषयी है और विभिन्न विषयों के माध्यम से प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन कराता है:

- **जीवविज्ञान**: पौधों की वृद्धि, पारिस्थितिकी तंत्र, कीट नियंत्रण
- **गणित**: क्षेत्रफल, उपज और लागत की गणना
- **भूगोल**: जलवायु क्षेत्र, मृदा वितरण, भूमि उपयोग
- **पर्यावरण विज्ञान**: जैविक खेती, कम्पोस्टिंग, जैव विविधता
- **व्यावसायिक शिक्षा:** खेती, फार्म प्रबंधन, फसल कटाई के बाद की प्रक्रियाओं तथा कृषि उद्यमिता में व्यावहारिक प्रशिक्षण

विद्यार्थियों को स्वयं करके सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है—चाहे वह औषधीय उद्यान का रखरखाव हो या मृदा के नमूनों का विश्लेषण। इस प्रकार BSB जिज्ञासा, आलोचनात्मक सोच

और वास्तविक जीवन की समस्या-समाधान क्षमता का विकास कर रहा है।

3. रोजगार और उद्यमिता के लिए कौशल निर्माण

BSB का व्यावसायिक मॉडल विद्यार्थियों को ऐसे व्यावहारिक कौशल प्रदान करता है जो ठोस परिणाम देते हैं। मृदा परीक्षण और सिंचाई से लेकर डेयरी एवं खाद्य प्रसंस्करण तक, विद्यार्थी ऐसे कौशल विकसित करते हैं जो बाजार-उन्मुख और समुदाय-आधारित होते हैं। इससे कृषि-उद्यमिता की नींव भी रखी जाती है, जिससे विद्यार्थी निम्नलिखित क्षेत्रों में करियर पर विचार कर सकते हैं:

- जैविक खेती
- एग्री-टेक स्टार्टअप
- स्थानीय खाद्य उद्योग
- कृषि उत्पादों की आपूर्ति श्रृंखला और विपणन

यह व्यावसायिक दृष्टिकोण "कौशल भारत" और "आत्मनिर्भर भारत" जैसी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप है, जिससे युवाओं में बेरोजगारी कम करने में मदद मिलती है—उन्हें नौकरी के लिए तैयार करने के साथ-साथ स्वयं का व्यवसाय शुरू करने के लिए भी सक्षम बनाता है।

4. पर्यावरण जागरूकता और संरक्षण को बढ़ावा

जलवायु परिवर्तन और संसाधनों की कमी के युग में BSB की कृषि शिक्षा पर्यावरण के प्रति जागरूक नागरिकों की पीढ़ी तैयार कर रही है। विद्यार्थी सीखते हैं:

- जलवायु परिवर्तन का फसल उत्पादन पर प्रभाव
- वर्षा जल संचयन, फसल चक्र, प्राकृतिक कीट नियंत्रण जैसी सतत प्रथाएँ
- जैव विविधता का संरक्षण और संसाधनों का जिम्मेदार उपयोग

यह न केवल वैज्ञानिक साक्षरता बढ़ाता है बल्कि प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी का भाव भी उत्पन्न करता है, जिससे विद्यार्थी पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय भागीदार बनते हैं।

5. कृषि कार्य को गरिमा और सम्मान लौटाना

लंबे समय से कृषि कार्य को, विशेषकर शहरी युवाओं के बीच, निम्न-स्तरीय कार्य के रूप में देखा जाता रहा है। BSB इस धारणा को बदलने का प्रयास कर रहा है, यह दिखाकर कि कृषि में कितना ज्ञान, नवाचार और धैर्य आवश्यक है। कृषि को औपचारिक पाठ्यक्रम में शामिल करके बोर्ड किसान की छवि को एक कुशल पेशेवर, वैज्ञानिक और उद्यमी के रूप में स्थापित कर रहा है।

BSB का विज़न: परंपरा में निहित, भविष्य के लिए तैयार

भारतीय शिक्षा बोर्ड का कृषि पाठ्यक्रम केवल एक शैक्षणिक प्रस्ताव नहीं है—यह एक सांस्कृतिक और आर्थिक पुनर्जागरण योजना है। यह बोर्ड की उस शिक्षा-दर्शन को दर्शाता है जो "प्राचीन भारतीय ज्ञान में निहित और आज की चुनौतियों के अनुरूप" है। व्यावहारिक शिक्षा, ग्रामीण विकास और सतत जीवनशैली पर बल देकर यह पहल एक ऐसी पीढ़ी तैयार कर रही है जो भूमि को, उसके पीछे के विज्ञान को और उसके भविष्य को भली-भांति समझती है।

"यदि आप एक महान राष्ट्र का निर्माण करना चाहते हैं, तो नई पीढ़ी को पौधारोपण एवं वृक्षों के संरक्षण का ज्ञान अवश्य प्रदान करें"

— BSB की परिवर्तनकारी शैक्षिक यात्रा का मूल विश्वास

संदर्भ

- कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय (2023)। *वार्षिक रिपोर्ट 2022–23*। भारत सरकार।
- शिक्षा मंत्रालय (2023)। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा – विद्यालय शिक्षा (NCF-SE)*। नई दिल्ली: भारत सरकार, स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) (2020)। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।